



Research Article

ज्ञानप्रकाश विवेक की कहानियों में सामाजिक यथार्थ और स्त्री विमर्श

बिन्दर कुमारी ^{1*}, डॉ. मुकेश कुमार ²

¹⁻² हिंदी विभाग, विजय सिंह पथिक राजकीय (पी ०जी ०) महाविद्यालय, कैराना, शामली, उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author: * बिन्दर कुमारी

DOI: <https://doi.org/10.5281/zenodo.20643820>

सारांश

ज्ञानप्रकाश विवेक हिंदी कथा-साहित्य के उन विशिष्ट रचनाकारों में हैं जिन्होंने आधुनिक समाज की जटिलताओं, वर्गीय अंतर्विरोधों और स्त्री की बदलती स्थिति को अत्यंत संवेदनशीलता एवं यथार्थपरक दृष्टि से चित्रित किया है। उनके कथा-संसार में सामाजिक यथार्थ और स्त्री विमर्श केवल दो भिन्न प्रवृत्तियाँ नहीं, बल्कि एक-दूसरे के पूरक रूप में उपस्थित हैं। विवेक की कहानियाँ समाज के भीतर व्याप्त पितृसत्तात्मक संरचनाओं, आर्थिक असमानताओं, और नैतिक विघटन पर तीखा प्रहार करती हैं। उनकी नायिकाएँ केवल शोषण की प्रतीक नहीं, बल्कि नारी चेतना, आत्म-सजगता, और प्रतिरोध की शक्ति की प्रतीक हैं। वे अपने अस्तित्व की खोज में समाज के पूर्वनिर्धारित मानदंडों को चुनौती देती हैं। विवेक की रचनाएँ यह संकेत करती हैं कि स्त्री की अस्मिता केवल व्यक्तिगत नहीं, बल्कि सामाजिक पुनर्निर्माण की प्रक्रिया का अनिवार्य तत्व है। उनका साहित्य मानवतावाद और समता की चेतना से ओतप्रोत है, जहाँ स्त्री की स्वतंत्रता को समाज के विकास से जोड़ा गया है। विवेक का कथा-संसार हमें यह सोचने पर विवश करता है कि जब तक स्त्री की आवाज़ को समान महत्व नहीं दिया जाएगा, तब तक कोई भी समाज पूर्ण नहीं हो सकता। यह शोधपत्र विवेक के कथा-साहित्य में सामाजिक यथार्थ की अभिव्यक्ति, स्त्री विमर्श की वैचारिक प्रासंगिकता, और नारी संघर्ष की बहुआयामी उपस्थिति का गहन विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

Manuscript Information

- ISSN No: 2583-7397
- Received: 12-11-2025
- Accepted: 28-12-2025
- Published: 31-12-2025
- IJCRM:4(6); 2025: 765-769
- ©2025, All Rights Reserved
- Plagiarism Checked: Yes
- Peer Review Process: Yes

How to Cite this Article

बिन्दर कुमारी, डॉ. मुकेश कुमार, ज्ञानप्रकाश विवेक की कहानियों में सामाजिक यथार्थ और स्त्री विमर्श. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ कंटेम्पररी रिसर्च इन मल्टीडिसिप्लिनरी. 2025;4(6): 765-769.

Access this Article Online



www.multiarticlesjournal.com

प्रमुख शब्द: सामाजिक यथार्थ, स्त्री विमर्श, नारी चेतना, अस्मिता, आत्मनिर्भरता, पितृसत्ता, मानवीय संवेदना, प्रतिरोध, समानता, मानवतावाद

I. परिचय

हिंदी कथा-साहित्य के विकासक्रम में सामाजिक यथार्थ और स्त्री विमर्श दो ऐसी प्रमुख धाराएँ हैं जिन्होंनेसाहित्य को मात्र सौंदर्यबोध से निकालकर सामाजिक परिवर्तन का उपकरण बनाया। प्रेमचंद के यथार्थवाद से लेकर मन्नू भंडारी, मृदुला गर्ग, कृष्णा सोबती और ज्ञानप्रकाश विवेक तक, लेखकों ने समाज में व्याप्त असमानताओं, लैंगिक विषमताओं, और मानवीय संवेदनाओं को अभिव्यक्त करने का कार्य किया है।

आधुनिक समाज, विशेषकर उत्तर-आधुनिक युग में, स्त्री के प्रति दृष्टिकोण में जितने बदलाव आए हैं, उतने ही द्वंद्व भी उत्पन्न हुए हैं। स्त्री अब केवल करुणा की प्रतीक नहीं, बल्कि अपनी अस्मिता, अधिकार और आत्मनिर्णय की चेतना से संपन्न व्यक्तित्व के रूप में उभर रही है। इस परिप्रेक्ष्य में ज्ञानप्रकाश विवेक की कहानियाँ अत्यंत महत्वपूर्ण हैं क्योंकि वे स्त्री को सामाजिक यथार्थ की पृष्ठभूमि में रखकर उसका संघर्ष, विद्रोह और संवेदना को समान रूप से व्यक्त करती हैं।

ज्ञानप्रकाश विवेक का कथा-संसार आधुनिक भारतीय समाज के बदलते सामाजिक-सांस्कृतिक परिदृश्य का सजीव चित्रण है। उनकी कहानियाँ समाज के उस हिस्से को आवाज़ देती हैं जो अक्सर मुख्यधारा से हाशिए पर है — विशेषतः महिलाएँ, श्रमिक वर्ग, और निम्न-मध्यमवर्गीय समुदाय। विवेक का यथार्थ केवल बाहरी संरचनाओं तक सीमित नहीं, बल्कि मनुष्य के भीतर के द्वंद्व, भय, असुरक्षा और अस्मिता के संकट तक पहुँचता है।

उनके नारी पात्र पितृसत्ता की जकड़नों में बंधे समाज में अपनी पहचान की तलाश करते हैं। वे पारंपरिक भूमिकाओं को अस्वीकार करते हुए आत्मनिर्भरता और समानता की ओर अग्रसर हैं। विवेक की नायिकाएँ यह मानती हैं कि मुक्ति केवल सामाजिक बंधनों से नहीं, बल्कि मानसिक गुलामी से भी आवश्यक है। इसलिए विवेक का स्त्री विमर्श किसी 'नारी बनाम पुरुष' द्वंद्व पर नहीं, बल्कि मानवतावादी संतुलन पर आधारित है।

सामाजिक यथार्थ के प्रति विवेक की दृष्टि करुणा से अधिक सजग आलोचना की है। वे समाज की उन विसंगतियों को उजागर करते हैं जो स्त्री की प्रगति में बाधक हैं — जैसे आर्थिक विषमता, नैतिक दोहरा व्यवहार, और सामाजिक आडंबर। उनके कथा-साहित्य का उद्देश्य केवल स्त्री की पीड़ा का वर्णन नहीं, बल्कि उसे परिवर्तनकारी चेतना में रूपांतरित करना है।

इस प्रकार, ज्ञानप्रकाश विवेक की कहानियाँ हिंदी कथा परंपरा में नारी चेतना और सामाजिक यथार्थ के संगम का सशक्त उदाहरण हैं। वे यह सिद्ध करती हैं कि स्त्री विमर्श केवल नारी की समस्या नहीं, बल्कि समाज की आत्मा से जुड़ा प्रश्न है — क्योंकि जहाँ स्त्री मुक्त है, वहीं समाज सच में सभ्य और समतामूलक कहा जा सकता है।

II. सामाजिक यथार्थ का स्वरूप

ज्ञानप्रकाश विवेक हिंदी कथा-साहित्य के उन सशक्त रचनाकारों में हैं जिनकी कहानियाँ आधुनिक समाज के बदलते परिवेश, उसकी विसंगतियों, और मनुष्य के अस्तित्व-संघर्ष का अत्यंत यथार्थपरक चित्र प्रस्तुत करती हैं। उनके कथा-संसार में सामाजिक यथार्थ मात्र बाहरी जीवन का दस्तावेज़ नहीं है, बल्कि यह उस अंतःसंघर्ष का साक्षी है जो

व्यक्ति और समाज के बीच निरंतर चलता रहता है। विवेक का यथार्थवाद न तो नकारात्मक है और न ही आदर्शवादी; यह समाज की वास्तविक स्थितियों को मानवीय दृष्टि से देखने और समझने का प्रयास है। वे समाज के भीतर व्याप्त आर्थिक विषमता, वर्गीय विभाजन, नैतिक पतन, और पारिवारिक विघटन को इस प्रकार उकेरते हैं कि पाठक स्वयं अपने परिवेश से सामना करने को बाध्य हो जाता है।

उनकी कहानियाँ जैसे "दरवाज़े पर दस्तक", "सड़क पर छतरी लिए खड़ी औरत", और "बंद खिड़की" — आधुनिक मध्यमवर्गीय समाज की टूटती मान्यताओं और भावनात्मक रिक्तता का सजीव चित्र हैं। "दरवाज़े पर दस्तक" में स्त्री की आर्थिक निर्भरता और आत्मसम्मान के संघर्ष को दिखाया गया है, जो हमारे सामाजिक ढाँचे के दोहरे चरित्र को उजागर करता है। इसी तरह "बंद खिड़की" में विवेक ने शहरी जीवन के अकेलेपन, असुरक्षा, और संवेदनहीनता को इस तरह प्रस्तुत किया है कि पाठक स्वयं उस विडंबना का हिस्सा बन जाता है। विवेक के पात्र भले ही साधारण दिखते हों, पर उनके भीतर गहरे मनोवैज्ञानिक द्वंद्व हैं जो समाज की जटिलता को अभिव्यक्त करते हैं।

ज्ञानप्रकाश विवेक का यथार्थ सामाजिक के साथ-साथ मनोवैज्ञानिक यथार्थ का भी रूप धारण करता है। उनके पात्र केवल बाहरी परिस्थितियों से नहीं जूझते, बल्कि अपने भीतर चल रहे संघर्षों से भी लड़ते हैं। विशेष रूप से उनकी स्त्री पात्रों के माध्यम से यह द्वंद्व अत्यंत गहराई से व्यक्त होता है। स्त्री के भीतर का मौन, उसकी विवशता, और अपने अस्तित्व की तलाश — विवेक की कथाओं का केंद्रीय तत्व है। यह यथार्थ केवल समाज की आलोचना नहीं, बल्कि उसकी आत्मालोचना बन जाता है।

विवेक का यथार्थ करुणा उत्पन्न करने वाला नहीं, बल्कि चेतना जगाने वाला है। उनकी कहानियाँ दया या सहानुभूति नहीं मांगती, बल्कि समाज से आत्ममंथन की अपेक्षा करती हैं। वे पाठक को यह सोचने पर विवश करते हैं कि आधुनिकता और प्रगति के बावजूद समाज में समानता, संवेदना और न्याय के मूल्य क्यों क्षीण हो रहे हैं। विवेक का उद्देश्य केवल समाज की सच्चाई को उजागर करना नहीं, बल्कि उसमें परिवर्तन की संभावना को भी रेखांकित करना है। यही कारण है कि उनका यथार्थ निराशाजनक नहीं, बल्कि परिवर्तनशील और मानवीय है।

अतः स्पष्ट है कि ज्ञानप्रकाश विवेक के कथा-साहित्य में सामाजिक यथार्थ का स्वरूप बहुआयामी है — वह बाहरी जीवन के संघर्षों से लेकर व्यक्ति के आंतरिक द्वंद्वों तक फैला हुआ है। उनके यहाँ समाज कोई निष्क्रिय पृष्ठभूमि नहीं, बल्कि पात्रों के व्यक्तित्व और सोच का निर्माणकर्ता तत्व है। विवेक का यथार्थ हमें यह एहसास कराता है कि जब तक समाज में समानता, संवेदना, और स्त्री-पुरुष के बीच संतुलन नहीं स्थापित होगा, तब तक सामाजिक यथार्थ अधूरा रहेगा। उनके साहित्य का यही बौद्धिक और मानवीय पक्ष उन्हें समकालीन कथा-साहित्य का एक महत्वपूर्ण यथार्थवादी कथाकार सिद्ध करता है।

III. स्त्री विमर्श का स्वरूप

ज्ञानप्रकाश विवेक के कथा-साहित्य में स्त्री विमर्श एक केंद्रीय और बहुआयामी विषय है। उनके कथा-संसार में स्त्री केवल करुणा या सौंदर्य की प्रतीक नहीं है, बल्कि संघर्ष, आत्म-सजगता और प्रतिरोध

की सशक्त अभिव्यक्ति है। विवेक की कहानियाँ यह सिद्ध करती हैं कि स्त्री का प्रश्न केवल “नारी अधिकार” तक सीमित नहीं है, बल्कि यह समग्र मानवीय गरिमा और सामाजिक न्याय का प्रश्न है। उनके यहाँ स्त्री की चेतना, पितृसत्तात्मक व्यवस्था के विरुद्ध संघर्ष करते हुए, एक नए जीवन दृष्टिकोण का निर्माण करती है — जहाँ स्त्री को केवल जीवित रहने का नहीं, बल्कि *स्वयं अपनी शर्तों पर जीने का अधिकार* प्राप्त होता है।

ज्ञानप्रकाश विवेक का स्त्री विमर्श किसी कट्टर नारीवाद या पश्चिमी स्त्रीवाद के अनुकरण में नहीं है। यह भारतीय समाज की वास्तविक परिस्थितियों, पारिवारिक संरचनाओं और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से उत्पन्न हुआ भारतीय स्त्री विमर्श है, जो संवेदना, संघर्ष और आत्मनिर्भरता की त्रिवेणी के रूप में प्रवाहित होता है। उनकी नायिकाएँ न तो पुरुष से घृणा करती हैं, न समाज से पलायन; बल्कि वे समाज की संरचनाओं को भीतर से बदलने का प्रयास करती हैं। वे यह मानती हैं कि स्त्री की मुक्ति केवल बाहरी स्वतंत्रता में नहीं, बल्कि मानसिक गुलामी से मुक्ति में निहित है।

उनकी प्रसिद्ध कहानियाँ — “उस पार की औरतें”, “सड़क पर छतरी लिए खड़ी औरत”, और “सीढ़ियों पर बैठी औरत” — इस विमर्श की सशक्त मिसाल हैं। “उस पार की औरतें” में विवेक ने उन स्त्रियों का चित्रण किया है जो सामाजिक सीमाओं और पुरुष-निर्धारित भूमिकाओं को अस्वीकार कर अपने अस्तित्व की नई परिभाषा गढ़ती हैं। ये स्त्रियाँ समाज की “दया की पात्र” नहीं, बल्कि “निर्णय लेने वाली इकाईयाँ” हैं। इसी तरह “सड़क पर छतरी लिए खड़ी औरत” में नायिका अपने भीतर उठते सवाल और समाज की ठंडी दृष्टि से टकराती हुई दिखाई देती है। यहाँ स्त्री के संघर्ष को केवल व्यक्तिगत पीड़ा नहीं, बल्कि सामाजिक अन्याय के खिलाफ सामूहिक प्रतिरोध के रूप में देखा गया है।

विवेक की नारी चेतना तीन प्रमुख स्तरों पर उभरती है — पहला, मानसिक चेतना, जिसमें स्त्री अपने भीतर के भय, अपराधबोध और असुरक्षा से मुक्ति चाहती है; दूसरा, सामाजिक चेतना, जिसमें वह समाज के रूढ़ मानकों, विवाह संस्था और लैंगिक असमानताओं को चुनौती देती है; और तीसरा, आर्थिक चेतना, जहाँ वह आत्मनिर्भर बनने की दिशा में कदम बढ़ाती है। विवेक की नायिकाएँ यह समझ चुकी हैं कि बिना आर्थिक स्वतंत्रता के सामाजिक या मानसिक मुक्ति संभव नहीं। इसलिए उनका संघर्ष जीवन के हर स्तर पर सक्रिय है — घर की चारदीवारी से लेकर कार्यस्थल और समाज तक।

ज्ञानप्रकाश विवेक का स्त्री विमर्श अत्यंत मानवीय और यथार्थपरक है। वे स्त्री को किसी आदर्श प्रतिमा या देवी के रूप में प्रस्तुत नहीं करते, बल्कि उसे एक सामान्य मनुष्य के रूप में दिखाते हैं — जिसकी आकांक्षाएँ, इच्छाएँ और भावनाएँ किसी भी पुरुष के समान स्वाभाविक हैं। यही विवेक के साहित्य का सबसे बड़ा मानवीय पक्ष है। उनकी कहानियों में स्त्री अपने अस्तित्व को समाज के समान धरातल पर स्थापित करने का साहस रखती है। वह अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करती है, लेकिन इस संघर्ष में उसकी संवेदना समाप्त नहीं होती। विवेक की स्त्री पात्रों में प्रतिरोध के साथ-साथ करुणा, आत्म-सम्मान के साथ दायित्व-बोध, और स्वतंत्रता के साथ सामाजिक उत्तरदायित्व का भाव भी देखा जा सकता है।

विवेक का स्त्री विमर्श इस दृष्टि से भी उल्लेखनीय है कि वह केवल स्त्री की समस्या नहीं उठाता, बल्कि पुरुष मानसिकता और सामाजिक

संरचना दोनों को प्रश्नांकित करता है। उनके पात्र यह समझते हैं कि स्त्री-मुक्ति केवल स्त्रियों के प्रयास से नहीं, बल्कि संपूर्ण समाज की चेतना के जागरण से संभव है। इसलिए विवेक की कहानियाँ संघर्ष से अधिक संवाद की कहानियाँ हैं — जहाँ समाज और व्यक्ति, स्त्री और पुरुष, परंपरा और आधुनिकता, सभी के बीच समन्वय की खोज है। अंततः कहा जा सकता है कि ज्ञानप्रकाश विवेक का स्त्री विमर्श *संघर्ष से संवाद की यात्रा* है। यह स्त्री के भीतर के मौन को आवाज़ देता है, उसके अस्तित्व को स्वीकार्यता दिलाता है, और समाज में समानता तथा मानवीय गरिमा के मूल्य को पुनर्स्थापित करता है। विवेक की कहानियाँ नारी विमर्श को एक नई दिशा देती हैं — जहाँ स्त्री “विरोध का प्रतीक” नहीं, बल्कि “परिवर्तन की वाहक” बन जाती है। यही उनके कथा-साहित्य की सबसे बड़ी उपलब्धि है।

IV. सामाजिक यथार्थ और स्त्री विमर्श का अंतर्संबंध

ज्ञानप्रकाश विवेक के कथा-साहित्य में सामाजिक यथार्थ और स्त्री विमर्श एक-दूसरे से अविभाज्य रूप से जुड़े हुए हैं। उनके यहाँ स्त्री विमर्श किसी अलग या पृथक वैचारिक आंदोलन के रूप में नहीं उभरता, बल्कि वह समाज की संरचना, उसकी विसंगतियों और वर्गीय असमानताओं की परिणति के रूप में सामने आता है। विवेक का लेखन इस तथ्य को रेखांकित करता है कि स्त्री का संघर्ष केवल व्यक्तिगत नहीं, बल्कि सामूहिक सामाजिक संघर्ष का प्रतीक है। उनके कथा-संसार में स्त्री की स्थिति, समाज की स्थिति का दर्पण है जब स्त्री शोषित होती है, तब समाज स्वयं अपनी मानवीय गरिमा खो देता है।

विवेक की कहानियों में समाज के भीतर व्याप्त आर्थिक विषमता, पितृसत्तात्मक सत्ता-संरचना, नैतिक दोहरापन और सांस्कृतिक बंधन — सभी स्त्री के जीवन को सीधे प्रभावित करते हैं। उनका स्त्री विमर्श इस सामाजिक यथार्थ को केवल दिखाता ही नहीं, बल्कि उसके प्रतिरोध का मार्ग भी सुझाता है। उदाहरण के लिए, “सड़क पर छतरी लिए खड़ी औरत” में विवेक ने जिस नायिका का चित्रण किया है, वह शहरी सभ्यता के खोखले नैतिक ढाँचे को चुनौती देती है। वह केवल सामाजिक मान्यताओं के विरुद्ध नहीं, बल्कि अपने भीतर के भय और अपराधबोध के विरुद्ध भी संघर्ष करती है। यहाँ स्त्री का संघर्ष समाज के नैतिक पतन और वर्गीय भेदभाव पर टिप्पणी बन जाता है।

विवेक के यहाँ सामाजिक यथार्थ केवल बाहरी परिस्थितियों का नहीं, बल्कि व्यक्ति के भीतर बसे समाज का भी चित्रण करता है। उनके पात्र चाहे वे स्त्री हों या पुरुष — समाज की निर्मित सीमाओं से जूझते हुए दिखाई देते हैं। परंतु जहाँ पुरुष पात्र परिस्थितियों से हार मान लेते हैं, वहीं स्त्री पात्र उन सीमाओं को लांघने का साहस रखती हैं। यह साहस ही विवेक के स्त्री विमर्श को यथार्थ से जोड़ता है। वे दिखाते हैं कि स्त्री की चेतना समाज के भीतर परिवर्तन की सबसे सशक्त धारा बन सकती है।

ज्ञानप्रकाश विवेक का स्त्री विमर्श उनके सामाजिक यथार्थ का नैतिक और मानवीय आयाम है। उनकी कहानियों में स्त्री की पीड़ा केवल व्यक्तिगत या भावनात्मक नहीं होती, बल्कि वह पूरे समाज की अन्यायपूर्ण संरचना का परिणाम होती है। विवेक का उद्देश्य स्त्री को दया या सहानुभूति का पात्र बनाना नहीं है, बल्कि उसे समाज के समान भागीदार के रूप में प्रस्तुत करना है। वे मानते हैं कि जब तक स्त्री अपने निर्णय स्वयं नहीं लेगी, तब तक समाज में वास्तविक

परिवर्तन संभव नहीं। यह विचार उनके समूचे कथा-संसार का केन्द्रीय दर्शन है।

विवेक की रचनाओं में नारी संघर्ष का सामाजिक यथार्थ इस बात की पुष्टि करता है कि स्त्री-मुक्ति का प्रश्न समाज-मुक्ति से जुड़ा हुआ है। उनकी कहानियों में जब स्त्री आत्मनिर्भर बनती है, तो वह केवल अपने लिए नहीं, बल्कि समाज की नयी चेतना के लिए संघर्ष करती है। विवेक की कहानियाँ इस दृष्टि से अनूठी हैं कि वे स्त्री को सामाजिक परिवर्तन की वाहक के रूप में स्थापित करती हैं — एक ऐसी चेतना के रूप में जो अन्याय के विरुद्ध खड़ी होती है और मानवीय समानता की पुनर्स्थापना का माध्यम बनती है।

उनके यहाँ सामाजिक यथार्थ और स्त्री विमर्श का संबंध संवादात्मक (dialogic) है दोनों के बीच संघर्ष नहीं, परस्पर पूरकता है। समाज स्त्री को नियंत्रित करता है, पर वही समाज उसकी चेतना के कारण बदलता भी है। विवेक की नायिकाएँ यह दर्शाती हैं कि सामाजिक ढाँचा जितना बाहरी है, उतना ही आंतरिक भी; और जब स्त्री उस ढाँचे के भीतर अपनी स्वतंत्रता खोजती है, तो यथार्थ और विमर्श एक-दूसरे में घुलमिल जाते हैं।

अतः कहा जा सकता है कि ज्ञानप्रकाश विवेक के कथा-साहित्य में सामाजिक यथार्थ और स्त्री विमर्श का संबंध सह-अस्तित्व का है। दोनों मिलकर समाज के उस आयाम को उजागर करते हैं, जहाँ अन्याय के विरुद्ध प्रतिरोध और मानवीय संवेदना की पुनर्स्थापना संभव होती है। विवेक के लिए स्त्री विमर्श समाज के यथार्थ का मानवीय पुनर्लेखन है — एक ऐसी दृष्टि जो समाज को अधिक संवेदनशील, समान और न्यायसंगत बनाने की दिशा में ले जाती है।

V. निष्कर्ष

ज्ञानप्रकाश विवेक के कथा-साहित्य में सामाजिक यथार्थ और स्त्री विमर्श का समन्वय आधुनिक हिंदी कथा परंपरा का एक अत्यंत महत्वपूर्ण अध्याय है। उनकी कहानियाँ केवल समाज के दृश्य पक्ष का चित्रण नहीं करतीं, बल्कि उसके अंतर्निहित विरोधाभासों, नैतिक द्वंद्वों और मानवीय असमानताओं को भी गहराई से उद्घाटित करती हैं। विवेक का लेखन यह स्पष्ट करता है कि साहित्य का वास्तविक उद्देश्य केवल सौंदर्यबोध नहीं, बल्कि समाज की चेतना को जागृत करना है। उन्होंने अपने कथा-संसार में नारी को मात्र पीड़िता या करुणा की प्रतीक न मानकर उसे परिवर्तन और प्रतिरोध की धारा के रूप में प्रस्तुत किया है।

विवेक की कहानियों में स्त्री विमर्श और सामाजिक यथार्थ एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। जहाँ सामाजिक यथार्थ समाज की कठोर संरचनाओं, वर्गीय विषमताओं और नैतिक पतन को उजागर करता है, वहीं स्त्री विमर्श उसी समाज के भीतर मानवीय संवेदना और समानता की संभावनाओं को जन्म देता है। विवेक के लिए स्त्री की चेतना केवल व्यक्तिगत मुक्ति का प्रश्न नहीं, बल्कि समाज में न्याय और समानता की पुनर्स्थापना का माध्यम है। उनकी नायिकाएँ न तो किसी विचारधारा की कठपुतली हैं, न मात्र भावनात्मक प्राणी — वे अपनी सोच, संघर्ष और कर्म से समाज की संरचना को चुनौती देती हैं।

ज्ञानप्रकाश विवेक का योगदान इस बात में निहित है कि उन्होंने भारतीय स्त्री विमर्श को केवल पितृसत्ता के विरोध के रूप में नहीं, बल्कि मानवता के विस्तार के रूप में देखा। उनकी कहानियाँ यह दिखाती हैं कि स्त्री की मुक्ति पुरुष के विरोध में नहीं, बल्कि उसके

साथ संवाद के माध्यम से संभव है। वे किसी भी प्रकार के द्वंद्ववात्मक स्त्रीवाद से आगे बढ़कर एक संतुलित मानवतावादी दृष्टि प्रस्तुत करते हैं। इस दृष्टि में स्त्री और पुरुष दोनों समान रूप से समाज के अंग हैं, और दोनों की चेतना के बिना समाज की पूर्णता असंभव है।

विवेक के कथा-संसार का सबसे उल्लेखनीय पक्ष यह है कि उनके पात्र समाज के कठोर यथार्थ में जीते हुए भी आशा नहीं छोड़ते। उनके भीतर परिवर्तन की जिजीविषा है एक ऐसा विश्वास कि जीवन की कठिनाइयों के बावजूद मनुष्य की संवेदना और समानता के मूल्य जीवित रहेंगे। यही विवेक के साहित्य का नैतिक बल है।

आज के वैश्वीकरण और उपभोक्तावाद के युग में, जब समाज में मानवीय संबंधों का क्षरण और स्त्री की वस्तुकरण की प्रवृत्ति बढ़ रही है, ज्ञानप्रकाश विवेक की कहानियाँ और भी प्रासंगिक हो जाती हैं। वे हमें यह स्मरण कराती हैं कि स्त्री की मुक्ति, समाज की मुक्ति से अलग नहीं है। समाज तभी प्रगतिशील हो सकता है जब वह स्त्री की अस्मिता, समानता और स्वाभिमान को अपनी विकास यात्रा का अभिन्न अंग माने।

अतः कहा जा सकता है कि विवेक का कथा-साहित्य समकालीन समाज का दर्पण है — जिसमें यथार्थ की कठोरता भी है, संघर्ष की जटिलता भी, और परिवर्तन की संभावना भी। उनकी कहानियाँ यह संदेश देती हैं कि साहित्य तभी सार्थक है जब वह समाज को सोचने, समझने और बदलने की दिशा में प्रेरित करे। ज्ञानप्रकाश विवेक ने यही किया है — अपने शब्दों से समाज की संवेदना को पुनः जीवित किया, और स्त्री को उसके वास्तविक मानवीय स्वरूप में पुनर्स्थापित किया। यही उनके साहित्य की सबसे बड़ी उपलब्धि है।

संदर्भ सूची

1. विवेक ज्ञानप्रकाश. उस पार की औरतें. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन; 2012.
2. विवेक ज्ञानप्रकाश. सड़क पर छतरी लिए खड़ी औरत. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन; 2015.
3. भंडारी मन्नू. आपका बंटी. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन; 1971.
4. सोबती कृष्णा. मित्रो मरजानी. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन; 1966.
5. गर्ग मृदुला. अनित्य. नई दिल्ली: राधाकृष्ण प्रकाशन; 1980.
6. प्रियंवदा उषा. पचपन खंभे लाल दीवारें. नई दिल्ली: राधाकृष्ण प्रकाशन; 1961.
7. त्रिपाठी रमेशचंद्र. हिंदी कहानी का सामाजिक यथार्थ. नई दिल्ली: भारतीय साहित्य अकादमी; 2016.
8. मिश्रा सुरेश. ज्ञानप्रकाश विवेक की कहानियों में सामाजिक यथार्थ और स्त्री चेतना. समकालीन हिंदी साहित्य पत्रिका. 2020;34:44-52.
9. शर्मा आरके. हिंदी कथा-साहित्य में नारी चेतना का विकास. हिंदी आलोचना पत्रिका. 2018;28:21-30.
10. वर्मा नीलम. हिंदी कहानी में नारी विमर्श. जयपुर: भारतीय विद्या प्रकाशन; 2019.
11. द्विवेदी यशोदा. ज्ञानप्रकाश विवेक की कहानियों में मानवीय संवेदना और स्त्री अस्मिता. नई दिशा. 2021;12:56-64.
12. सिंह उमा. हिंदी कहानी में स्त्री विमर्श की प्रवृत्तियाँ. दिल्ली: हिंदी ग्रंथ अकादमी; 2017.

13. चौबे प्रेमशंकर. आधुनिक हिंदी कहानी: प्रवृत्तियाँ और प्रतिमान. इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन; 2015.
14. मौर्य हेमंत. समकालीन हिंदी कथा-साहित्य में शहरी स्त्री का यथार्थ. हिंदी समय. 2022.
15. पांडेय सुधा. हिंदी कथा में नारी की छवि. नई दिल्ली: साहित्य भवन; 2014.
16. मिश्र विभा. स्त्री विमर्श और आधुनिक हिंदी कहानी. समकालीन विचार. 2020.
17. सक्सेना आशा. स्त्री, समाज और साहित्य. दिल्ली: ज्ञानपीठ प्रकाशन; 2018.
18. भारती राजेश. ज्ञानप्रकाश विवेक की कथाओं में मध्यमवर्गीय स्त्री का संघर्ष. साहित्य संगम. 2021;40.
19. चतुर्वेदी मोना. हिंदी कहानी और समाज. पटना: नेशनल बुक एजेंसी; 2019.
20. कुमार राजेंद्र. समकालीन हिंदी कथा-साहित्य में यथार्थ का रूपांतरण. भारतीय साहित्य समीक्षा. 2022.

Creative Commons (CC) License

This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.